हिन्दी विभाग

स्नातक द्वितीय (II)

पत्र संख्या :- 03

रहस्यवाद के प्रवृत्तियों का वर्णन करें।

रहस्यवादी स्वरूप के विश्लेषणोपरान्त जिन मूल भूत प्रवृतियों के दर्शन मिलते हैं उनका उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है-

1.) अद्वैतदृष्टि की स्थापना :- हिन्दी के रहस्यवादी आधुनिक कवियों पर शंकराचार्य के अद्वैत तत्व का प्रत्यक्ष प्रभाव है। इसके परिणाम स्वरूप इनकी कविताओं में अद्वैतवादी दर्शन की सैद्धांतिक पीठिका विद्यमान है। अद्वैत की व्यापकता ग्रहण कर उसे साहित्य में व्याख्यायित करने में निराला ने कुशलता दिखाई है-

व्यष्टि और समष्टि में नहीं है भेद

भेद भ्रम जाता भ्रम

माया जिसे कहते हैं

जिस प्रकाश के बल से

सौर ब्रह्माण्ड को उद्भासमान देखते हो

उससे नहीं वंचित है एक भी मनुष्य भाई॥

2) दाम्पत्य सम्बन्ध की स्वीकृति :— रहस्यवादी कवियों ने अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति को विशुद्ध दाम्पत्य सूत्र में अभिव्यक्त किया है। कबीर और महादेवी का रचना-संसार तो दाम्पत्य संसार की तन्मयता में आकर डूबा हुआ ही है, निराला भी इससे नहीं बच पाये हैं—

"बंद तुम्हारा द्वार
मेरे सुहाग श्रृंगार
द्वार यह खोलो
सुनो भी मेरी करुण पुकार
जरा कुछ बोलो।"

3) पवित्र प्रेम की अभिव्यक्ति :— रहस्यवादी कवियों ने अपने प्रेम के प्रति जो पवित्रता प्रदर्शित की है वह मूलतः भारतीय आध्यात्मिक दृष्टि ही है। भक्त और भगवान, प्रियतम और प्रियतमा, पति और पत्नी के रूप में ग्रहीत प्रेम आध्यात्मिकता का सम्बल कभी नहीं छोड़ता। निराला की निम्न पंक्ति वासना का आँचल छोड़कर नूतन संस्कार का सम्बल पाती है

4.) जिज्ञासा का आधिक्य :- रहस्यवादी कवियों में असीम अज्ञात और अगोचर सत्ता के प्रति जिज्ञासा की भावना सतत् विद्यमान है -

"हे अनन्त रमणीय कौन तुम
यह मैं कैसे कह सकता
कैसे हो, क्या हो, इसका तो
भार-विचार न सह सकता।"

5.) विरहानुभूति का प्राबल्य :- रहस्यवादी कवियों में मिलन की इच्छा भी तीव्र है और विरह की पीड़ा भी तीव्र। इन्हें प्रियतम-प्रियतमा से वियोग कभी सह्य नहीं होता। यह भला सम्भव भी कैसे हो? क्या आत्मा कभी परमात्मा के सानिध्य के बिना अस्तित्व बोध पा सकती है।

6.) दर्शन की विषय वस्तु :- परम्परागत रहस्यवादी कवियों ने एक मत होकर यह धारणा बनायी है कि इसमें निहित सत्यान्वेषण एक दर्शन है जो रहस्य के आवरण से बंधा होता है। इस दर्शन की उपलब्धि विशेषकाल और अर्थ में विशेष व्यक्ति को ही होती है। आधुनिक रहस्यवादी कवियों की स्वीकृति भी रहस्यवाद को दर्शनविशेष के रूप में ही मिलती है।

२) परोक्ष की जिज्ञासा :- प्रत्यक्ष जगत् को मिथ्या मानकर रहस्यवादी कवियों ने परोक्ष के प्रति असीम जिज्ञासा पाली। इनकी प्रतीति है कि उस असीम विराट सत्ता से मिलनेच्छा, उस मिलने से प्राप्त आनन्दानुभूति और पुनः उसी विराट में अपने लघुत्व का होना ही जीवन का उत्कर्ष है।

३) आत्म विश्वास की भावना :- वेदों की ऋचाओं और उपनिषदों के सिद्धान्तों से प्रेरित होकर इन कवियों ने जीवन के आदिम रहस्यों को जानने के क्रम में जिन मानवीय मूल्यों तथा विश्वबन्धुत्व की भावना, कर्म साधना व त्याग, सहिष्णुता और लोक कल्याण की भावना को पाया उससे मानव मन में आत्म विश्वास की एक लहर उत्पन्न हुई व संहार, भौतिक समृद्धि और जाति-वर्ण-द्वेष से त्रस्त कवियों ने एक ऐसे नवीन धर्म की स्थापना का प्रयास किया जिसमें सम्पूर्ण मानव जाति में विश्वास की नई नई कोंपले उग आयी और मनुष्य की अभिलाषा स्वयं ईश्वरत्व के नजदीक आ पहुँची।

प्रस्तुतकर्त्ता
दिनांक
05/11/2020
कैलाश कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो॰- 8292127041